9. ग्रामीण धर्म
(RURAL RELIGION)

ग्रामीण भारत धर्म प्रधान है। विश्व के अधिकांश लोग जो ग्रामों में निवास करते हैं, शहरी लोगों की तुलना में धर्म से अधिक प्रभावित हैं। इसका मुख्य कारण है ग्रामवासियों की कृषि एवं प्रकृति पर निर्भरता। कृषि में हुई वैज्ञानिक प्रगति का ग्रामवासियों पर कम प्रभाव पड़ा है और वे अब भी अधिकांशतः कृषि के परम्परात्मक तरीकों पर निर्भर हैं। प्राकृतिक शक्तियों; जैसे वर्षा, सर्दी, गर्मी, आंधी, ओस, पाला, आदि का कृषि से घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसलिए ग्रामीण लोग प्राकृतिक शक्तियों की पूजा, प्रार्थना, आराधना और भक्ति करते हैं। प्रकृति पर निर्भरता एवं प्रकृति से निकटता ने ग्रामवासियों को प्रकृति पूजा के लिए प्रेरित किया है। कृषि कार्य की प्रधानता एवं प्रकृति पर निर्भरता ने ही ग्रामवासियों में अधिकाधिक धार्मिकता उत्पन्न की है। ग्रामों में हमें धर्म का आदिम रूप देखने को मिलेगा और ग्रामीणों का मस्तिष्क धर्म से जकड़ा हुआ है। धर्म का उनके जीवन से सम्बन्धित सभी पक्षों पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

धर्म का अर्थ (Meaning of Religion)

धर्म में अलौकिक शक्ति में विश्वास किया जाता है। उस शक्ति को व्यक्ति एवं समाज से श्रेष्ठ समझा जाता है और मानव उसके प्रति श्रद्धा, भक्ति एवं भय की भावना से प्रेरित होकर उसकी पूजा और आराधना करने लगता है। धर्म की परिभाषा करते हुए **टायलर** लिखते हैं, "धर्म आध्यात्मिक शक्ति में विश्वास है।"[1]

फ्रेजर लिखते हैं, "धर्म से मैं मनुष्य से श्रेष्ठ उन शक्तियों की सन्तुष्टि या आराधना समझता हूं, जिनके सम्बन्ध में यह विश्वास किया जाता है कि वे प्रकृति और मानव जीवन को मार्ग दिखलाती और नियन्त्रित करती हैं।"[2]

मैलिनोवस्की के अनुसार, "धर्म क्रिया का एक ढंग है, साथ ही विश्वासों की एक व्यवस्था और धर्म एक समाजशास्त्रीय घटना के साथ-साथ व्यक्तिगत अनुभव भी है।"[3]

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर **धर्म की निम्नांकित विशेषताएं** प्रकट होती हैं : (i) धर्म में अलौकिक शक्ति में विश्वास किया जाता है। यह शक्ति मानव और समाज से ऊंची एवं श्रेष्ठ समझी जाती है, (ii) इस अलौकिक शक्ति के प्रति विश्वास को मानव संवेगात्मक रूप में भक्ति, श्रद्धा, पूजा, प्रेम और आराधना के द्वारा प्रकट करता है, (iii) दुर्खीम का मत है धर्म का सम्बन्ध पवित्र वस्तुओं से है, (iv) धार्मिक क्रियाओं में अनेक धार्मिक सामग्रियों, प्रतीकों, जादू-टोना, कथाओं, आदि का समावेश होता है।

ग्रामीण धर्म की विशेषताएं (लक्षण) (Characteristics of Rural Religion)

ग्रामीण धर्म का कृषि एवं प्रकृति से घनिष्ठ सम्बन्ध है। ग्रामीण धर्म में हमें पितृ पूजा, बहुदेववाद, प्रकृति पूजा, जड़ देवतावाद और भूत-प्रेतों में विश्वास, आदि देखने को मिलेंगे। **ए. आर. देसाई**[4] ने ग्रामीण धर्म के प्रमुख तीन पक्षों का उल्लेख किया है—(i) ग्रामीण धर्म का

---

1. "Religion is the belief in spiritual being."—E. B. Tylor, *Primitive Culture*, p. 424.
2. "By religion I understand a propitation or conciliation of powers superior to man which are believed to direct and control the causes of nature and of human life."
—James Frazer, *The Golden Bough*, p. 459.
3. "Religion is a mode of action as well as a system of belief, and a sociological phenomenon as personal experience."
—B. Malinowski, *Magic, Science and Religion and other Essays*, p. 24.
4. A. R. Desai, *Rural Sociology in India*, p. 56.

विश्व के प्रति क्या दृष्टिकोण है और ग्रामीण लोग विश्व की व्याख्या किस प्रकार से करते हैं, (ii) ग्रामीण धर्म के अन्तर्गत कौन-कौन से संस्कार और विधि-विधान आते हैं एवं (iii) धर्म का संस्थागत स्वरूप क्या है? इन तीनों पक्षों का हम यहां संक्षेप में उल्लेख करेंगे।

(1) **विश्व के प्रति दृष्टिकोण**—ग्रामीण धर्म में हमें जादू-टोना, आत्मावाद, भूत-प्रेत में विश्वास, पूर्वज पूजा और पौराणिक कथाओं, आदि तत्वों का समावेश देखने को मिलेगा। ग्रामीण धर्म में अनेक लोकों की कल्पना की गयी है; जैसे पितृलोक, प्रेतलोक, देवलोक, बैकुण्ठ धाम, आदि। इन विभिन्न लोकों में क्रमशः मृतपूर्वजों अशरीर-आत्माओं तथा देवी-देवताओं के निवास की कल्पना की गयी है। ग्रामीण धर्म में प्राकृतिक शक्तियों के पीछे विभिन्न देवताओं की कल्पना की गयी है; जैसे वर्षा का देवता, हवा का देवता, महामारी का देवता, नदियों का देवता, वन देवता, आदि। इसके परिणामस्वरूप बहुदेववाद का जन्म हुआ व प्रकृति पूजा आरम्भ हुई। ग्रामीण मानव की प्राकृतिक शक्तियों के प्रति अज्ञानता व निर्भरता ने ही इस प्रकार की अवधारणा को जन्म दिया। वे कार्य-कारण के वैज्ञानिक नियमों से परिचित नहीं हैं। अज्ञानता के कारण ग्रामीण लोगों में इन प्राकृतिक शक्तियों के प्रति अन्धविश्वास, भय और श्रद्धा पैदा हुई। इसका लाभ पुरोहितों और ब्राह्मण लोगों ने उठाया और उन्हें अन्धविश्वासों में जकड़ दिया। इन सभी का प्रभाव चेतन व अचेतन रूप से ग्रामीणों के सामाजिक व नैतिक जीवन पर पड़ा।

(2) **धार्मिक संस्कार और विधि-विधान**—ग्रामीण लोगों ने अलौकिक शक्ति के प्रति अपनी धारणा और विश्वास को विभिन्न संस्कारों तथा विधि-विधानों द्वारा प्रकट किया है। धर्म से सम्बन्धित क्रियाओं को प्रमुख तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है :

(अ) **प्रार्थनाएं**—ग्रामीण लोग अपने घर में एवं बाहर अनेक देवी-देवताओं की प्रार्थनाएं करते हैं। पारिवारिक देवी-देवता की पूजा प्रत्येक घर में की जाती है। प्रत्येक जाति के विशिष्ट देवी- देवता, मन्दिर और देवस्थान हैं, यहां तक कि प्रत्येक गली और मोहल्ले में भी अलग-अलग देवी-देवता होते हैं। कुछ देवी-देवताओं की पूजा प्रतिदिन की जाती है तो कुछ की विशेष अवसर पर। प्रत्येक गांव का हमें एक ग्राम देवता देखने को मिलेगा। इसी प्रकार से सारे गांव में सामूहिक रूप से पूजा एवं आराधना की जाती है। कई देव स्थानों में अछूत लोगों को प्रवेश करने की मनाही होती है।

(ब) **यज्ञ**—यज्ञ भी ग्रामीण धर्म का मुख्य अंग है। पत्तों से जल छिड़कने, देवी-देवताओं का विशेष भोग चढ़ाने से लेकर पशु और मानव बलि तक के रूप में यज्ञ किया जाता है। ग्रामीण धर्म में अनेक उप-धर्म और इनके आधार पर यज्ञों में भी अन्तर पाया जाता है। यज्ञ के द्वारा वर्षा, नदी और रोगों के देवताओं को प्रसन्न करने का प्रयत्न किया जाता है और उनके क्रोध को शान्त कर उनसे दया की प्रार्थना की जाती है।

ग्रामीण लोगों की रोग, बाढ़ और अन्य विनाशकारी घटनाओं के प्रति धारणा को समझने के लिए यज्ञों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण किया जाना चाहिए। इससे उनके जगत एवं जीवन के प्रति विचारों, सामाजिक आदतों और मनोभावों को समझने में सहायता मिलेगी। यज्ञ समाज में संस्तरण को किस प्रकार से बनाये रखते हैं, यह भी ज्ञात होगा। यज्ञों के अध्ययन के आधार पर प्राचीन भारतीय समाज की सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक

को समझने में भी सहायता मिलेगी। ग्रामीण संस्कृति का धर्म से घनिष्ठ सम्बन्ध है
धर्म के प्रधान अंग हैं।

(ख) **अनुष्ठान (विधि-विधान)** (Rituals)—अलौकिक शक्ति के प्रति विश्वास को ग्रामीण विभिन्न प्रकार के संस्कार और विधि-विधानों के द्वारा प्रकट करते हैं। विधि-विधान वे साधन हैं जिनके द्वारा जीवन की शुद्धता और पवित्रता का निर्धारण होता है। जातियों आधार पर विधि-विधानों में भी भिन्नता पायी जाती है। विधि-विधानों का पालन न करने जाति से बहिष्कार का भय भी रहता है। हमें ग्रामीण जीवन के सभी पक्षों से सम्बन्धित विधि-विधान देखने को मिलेंगे। भोजन, स्नान, जन्म, विवाह, मृत्यु, फसल बोने एवं काटने, गृह-प्रवेश और शिक्षा प्राप्त करने, आदि सभी पहलुओं से सम्बन्धित विभिन्न संस्कार किये जाते हैं। ये संस्कार सुबह से शाम तक, एक महीने से दूसरे महीने तक, एक वर्ष से दूसरे वर्ष तक तथा जन्म से मृत्यु तक मानव जीवन से जुड़े हुए हैं। कई संस्कार तो मृत्यु के बाद भी मृत व्यक्ति के लिए किये जाते हैं। इसी सन्दर्भ में **देसाई** कहते हैं, "वास्तव में, यह कहा जा सकता है कि यह पता लगाना बहुत कठिन है कि हिन्दू समाज में कहां धार्मिक कर्मकाण्डों का अन्त होता है और कहां धर्म-निरपेक्ष क्रियाओं का प्रारम्भ।"[1]

(3) **संस्थात्मक स्वरूप**—अधिकांश ग्रामवासी हिन्दू धर्म के अनुयायी हैं। हिन्दू धर्म में अनेक मत, सम्प्रदाय और शाखाएं प्रचलित हैं। इन उप-शाखाओं ने संस्थाओं व धार्मिक संगठनों का रूप धारण कर लिया है। इनमें से कई संगठन प्रान्तीय स्तर के हैं तो कई राष्ट्रीय स्तर के। इनके अपने मन्दिर, आश्रम और मठ हैं, जहां इन मतों के अनुयायी अपने इष्ट की पूजा करने एवं धार्मिक प्रवचन सुनने के लिए एकत्रित होते हैं। इन धार्मिक संगठनों के पास अपनी सम्पत्ति है। अपने उपधर्मों तथा मतों के प्रचार के लिए इनके कार्यकर्ताओं के संगठन, पुरोहित और प्रचारक, आदि हैं। कुछ धर्म ऐसे भी हैं जिनके नेता और प्रचारक अभी नियमित संगठनों का निर्माण नहीं कर सके हैं।

यूरोप एवं एशिया के कई देशों में राज्य धर्म पाये जाते हैं, किन्तु भारत में कोई भी धर्म राज्य धर्म नहीं रहा है। यहां धार्मिक संगठन सदैव से ही राज्य से अलग रहे हैं। परिणामस्वरूप यहां धर्म को लेकर राज्यों में संघर्ष नहीं हुए हैं और कोई भी धार्मिक आन्दोलन राज्य के विरुद्ध नहीं रहा। भारत में धार्मिक आन्दोलनों के नेता भक्त ही रहे हैं जिनका उद्देश्य समाज में सुधार लाना रहा है। भक्ति आन्दोलन जनतान्त्रिक भावनाओं पर आधारित रहे हैं और उन्होंने जाति की बुराइयों एवं सामाजिक कुरीतियों को दूर करने पर जोर दिया है। इन भक्तों ने देशी भाषाओं के विकास में भी योग दिया और इन्हीं भाषाओं में धार्मिक साहित्य का सृजन किया। इस प्रकार से भक्त लोग हिन्दू संस्कृति को सामान्य जनता तक पहुंचाते रहे हैं। कभी-कभी कोई हिन्दू, बौद्ध तथा मुस्लिम राजा ने अपने धर्म के प्रचार के लिए राज्य शक्ति का प्रयोग किया फिर भी साधारणतः यहां धर्म राज्य का अंग नहीं रहा।

पुरोहितों एवं साधुओं ने भी धार्मिक कार्यों में महत्वपूर्ण योग दिया है। पुरोहितों के जहां स्थायी निवास पाये जाते हैं, वहीं साधु-संन्यासी गांवों में घूम-घूमकर धार्मिक प्रचार का कार्य करते हैं। साधु संन्यासी अपने भाई-बहिन, पत्नी-पुत्र और कुटुम्बी जनों को त्यागकर धर्म प्रचार में लगे होते हैं। पुरोहित गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हैं। परिवार, मन्दिर, ग्राम और

[1] A. R. Desai, *Ibid.*, p. 59.

जनजातियों के अनुसार पुरोहित भी अलग-अलग होते हैं। ग्रामवासियों के धार्मिक एवं लौकिक जीवन पर इन पुरोहितों का काफी प्रभाव होता है, क्योंकि जीवन की क्रियाएं धर्म से अनुप्राणित होती हैं। प्रत्येक क्रिया का प्रारम्भ और समाप्ति धार्मिक विधि-विधानों द्वारा होती है। धार्मिक विधि-विधान इन क्रियाओं में पवित्रता ला देते हैं। वर्तमान में ग्रामवासियों के जीवन में धर्म का प्रभाव कुछ कम हो रहा है।

ग्रामीण क्षेत्रों में मन्दिर का महत्व

ग्रामीण क्षेत्रों में मन्दिर-मस्जिद और देवालयों ने महत्वपूर्ण धार्मिक सामाजिक भूमिका निभायी है। मन्दिर केवल देवी-देवताओं की पूजा, आराधना एवं उपासना के केन्द्र ही नहीं रहे, वरन् इसके द्वारा गांव में मुख्य कार्यों का संचालन भी किया जाता रहा है। ग्रामों में मन्दिरों ने जो महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभायी हैं, वे इस प्रकार से हैं :

(1) मन्दिर गांव में शिक्षा के केन्द्र रहे हैं और इनके द्वारा पाठशालाएं चलायी जाती रही हैं। मन्दिरों में धार्मिक प्रवचनों व कथाओं का आयोजन होता था जिनमें प्राचीन भारतीय इतिहास का वर्णन किया जाता था।

(2) मन्दिर गांवों में परोपकार एवं समाज कल्याण का कार्य भी करते थे। ग्रामवासियों से पैसा एकत्रित करके उनसे धर्मशालाएं, तालाब व कुएं, आदि बनवाने का कार्य करते थे तथा संकटग्रस्त लोगों की सहायता करते थे।

(3) मन्दिर सामूहिक, सामाजिक व धार्मिक उत्सवों एवं समारोहों का आयोजन करते थे जिनमें सभी लोगों का सहयोग प्राप्त किया करते थे।

(4) मन्दिरों द्वारा विवाह संस्कारों का आयोजन भी किया जाता था।

(5) मन्दिर धार्मिक त्यौहारों व नये वर्ष के प्रारम्भ, आदि के समय ग्रामीण सह-भोज का आयोजन भी करते थे।

(6) मन्दिर साहित्य एवं कला के केन्द्र रहे हैं। कई मन्दिरों में अपने गायक, नर्तक एवं संगीतज्ञ भी होते थे।

(7) मन्दिर ग्रामीण संस्कृति के वाहक एवं संरक्षक रहे हैं। ग्राम मन्दिर ग्राम संस्कृति के केन्द्र रहे हैं और ग्राम संस्कृति के विभिन्न पक्ष; जैसे धर्म, लौकिकता, कला और साहित्य मन्दिर के इर्द-गिर्द ही घूमते रहते थे।

(8) मन्दिर ग्रामीण लोगों के नैतिक जीवन को नियन्त्रित करते थे और नैतिक जीवन के स्रोत थे। मन्दिर का पुरोहित ग्रामवासियों के क्रिया-कलापों पर नियन्त्रण रखने का कार्य करता था।

(9) मन्दिर ग्रामीण आर्थिक क्रिया-कलापों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। कृषि की सारी प्रक्रियाओं; जैसे बीज बोने, फसल काटने, आदि का प्रारम्भ धार्मिक संस्कारों के द्वारा ही होता था। कोई भी शिल्पकार अपने व्यवसाय का शुभारम्भ धार्मिक क्रियाओं से ही करता था। मन्दिर का पुरोहित इन धार्मिक क्रियाओं को सम्पन्न कराता और हल तथा व्यवसाय से सम्बन्धित औजारों को पवित्र बनाता था। इस प्रकार मन्दिर आर्थिक जीवन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे।

(10) मन्दिर ग्राम में न्याय का कार्य भी करते थे। ग्रामीण विवाद देवी-देवता की सौगन्ध, धर्म की आन और ईश्वर की साक्षी में मन्दिरों पर निपटाये जाते थे। अपराधी के लिए मन्दिर के प्रायश्चित की विधि और दण्ड तय करते थे।

(11) मन्दिर अपने पुरोहित के द्वारा भविष्यवाणी का कार्य भी करते थे।

(12) मन्दिर ग्राम में सामाजिक केन्द्र का कार्य भी करते थे। ग्रामवासी मन्दिर पर इकट्ठा गप-शप करते थे। मन्दिर सूचना प्राप्त करने एवं प्रसार करने के केन्द्र भी थे।

(13) ग्राम में सार्वजनिक सभाओं एवं बैठकों के लिए मन्दिर ही उपयुक्त स्थल थे।

(14) मन्दिरों ने ग्रामों के लिए अध्यापक, चिकित्सक, नैतिक पुरुष, गायक, कथाकार, लेखक, ज्योतिषी, गणितज्ञ एवं भविष्यवक्ता प्रदान किये हैं।

स्पष्ट है कि ग्रामों में मन्दिर महत्वपूर्ण सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं साहित्यिक भूमिकाएं निभाने का कार्य करते हैं। गांवों में विभिन्न जातियों एवं उपजातियों के अलग-अलग मन्दिर पाये जाते हैं। कुछ मन्दिर ऐसे होते हैं जिनमें सभी ग्रामवासी पूजा और आराधना का कार्य करते हैं। कुछ मन्दिर निजी सम्पत्ति होते हैं तो कुछ सार्वजनिक।

ग्रामीण धर्म के अध्ययन की आवश्यकता (महत्व) (Need or Importance of Study of Rural Religion)

(1) **ग्रामीण धर्म प्राचीन भारतीय संस्कृति के विकास को प्रकट करता है।** अभी भारतीय संस्कृति का इतिहास विभिन्न खण्डों में बिखरा हुआ है और भारतीय संस्कृति की उत्पत्ति एवं विकास को लेकर अनेक विवाद प्रचलित हैं। भारत के विभिन्न भागों में पाये जाने वाले ग्रामीण धर्मों की समानता व असमानता का अध्ययन कर हम भारतीय संस्कृति की उत्पत्ति, विकास और सम्पूर्णता को समझ सकते हैं। विभिन्न ग्रामों में हमें कुछ देवी-देवता, पूजा की विधियां, विधि-विधान, पौराणिक कथाएं ऐसी मिलेंगी जो अन्यत्र कहीं प्रचलित नहीं हैं और प्रादेशिक भिन्नता को प्रकट करती हैं। दूसरी ओर अनेक देवी-देवता, विधि-विधान और कथाएं ऐसी मिलेंगी जो समान रूप से भारत के सभी गांवों में पायी जाती हैं।

(2) इन समानताओं व असमानताओं के आधार पर दो बातें स्पष्ट होती हैं। एक, धार्मिक सामान्य लक्षण इस बात के सूचक हैं कि उनकी उत्पत्ति का मूल स्रोत समान था और प्रादेशिक भिन्नताओं के बावजूद भी वे भारतीय संस्कृति के प्रतीक हैं। दूसरा, समानता होते हुए भी वे विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों के स्वतन्त्र प्रतिनिधि हैं।

(3) प्रादेशिक ग्रामीण धर्मों के अध्ययन एवं समाजशास्त्रीय विश्लेषण के द्वारा हम उनकी उत्पत्ति एवं विकास को ज्ञात कर सकेंगे। ये धर्म ग्रामीण लोगों के देशान्तर गमन के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों में फैलते रहे हैं।

(4) भारतीय भौगोलिक दशाओं ने भी धर्म को प्रभावित किया है। महान नदियों; जैसे गंगा, यमुना, सिन्धु, कावेरी, कृष्णा, आदि ने तथा पर्वतों एवं व्यापारिक मार्गों ने भी धार्मिक लक्षणों को प्रभावित किया है। वर्तमान में रेल यातायात ने धर्म पर भौगोलिक प्रभाव को क्षीण किया है।

(5) भारत के विभिन्न धर्मों, विश्वासों, विधि-विधानों, देवी-देवताओं के सामान्य लक्षणों एवं विभिन्नताओं का अध्ययन करके हम भारतीय ग्रामीण संस्कृति के विकास और इतिहास को ज्ञात कर सकेंगे।

(6) हिन्दू ग्रामीण धर्म का अध्ययन समाजशास्त्रियों के लिए विशेष महत्व और आकर्षण का केन्द्र-बिन्दु है, क्योंकि इसमें धार्मिक भिन्नता की प्रचुरता और उनका सम्मिश्रण पाया जाता है। उनके अध्ययन से हम मानव समाज के विकास की सभी अवस्थाओं को ज्ञात कर सकते हैं।

(7) **देसाई**[1] का मत है कि भारतीय ग्रामीण धर्म भारत के प्राचीन, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा नृवंश सम्बन्धी इतिहास को प्रकट करता है। इसके अध्ययन द्वारा हम प्राचीन सामाजिक समूहों के आर्थिक संघर्षों, सामाजिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक सम्मिश्रण को ज्ञात कर सकते हैं। हमें समाज पर धर्म की छाया देखने को मिलेगी। भारत के ग्रामीण धर्म एवं पुराण विद्या के अध्ययन के आधार पर समाज के विकास और उसकी विभिन्न अवस्थाओं को ज्ञात किया जा सकता है।

(8) ग्रामीण समाजशास्त्री को विभिन्न धर्मों की उत्पत्ति और विस्तार का अध्ययन करना चाहिए। देवी-देवताओं का प्रव्रजन (Migration) और मिश्रण लोगों के गमन और सम्मिश्रण की ऐतिहासिक प्रक्रिया को स्पष्ट करते हैं। देवी-देवताओं को दुष्ट या परोपकारी बताने, उनकी निन्दा या प्रशंसा करने वाली पौराणिक गाथाओं के आधार पर विभिन्न नृवंशीय समूहों के संघर्षों को ज्ञात किया जा सकता है। हिन्दू धर्म की ही भांति इस्लाम व ईसाई धर्म का भी अध्ययन किया जाना चाहिए क्योंकि इनका भी ग्रामों में प्रचलन रहा है।

भारतीय ग्रामीण जीवन में धर्म का महत्व (Importance of Religion in Indian Village Life)

भारत एक धर्म-प्रधान देश है। यहां जीवन की अधिकांश क्रियाओं का प्रारम्भ और समाप्ति धार्मिक विधि-विधानों से होती है। इसलिए ही कहा जाता है कि भारतीयों का सम्पूर्ण जीवन धर्म के इर्द-गिर्द घूमता है। चूंकि भारतीय ग्रामवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि है और कृषि प्रकृति पर निर्भर है, अतः प्राकृतिक शक्तियों में ग्रामवासियों का अटूट विश्वास है और वे उनकी पूजा व आराधना में ही अपना हित समझते हैं।

(1) एक शिल्पकार अपनी दैनिक आर्थिक क्रियाओं का प्रारम्भ गणपति, लक्ष्मी अथवा अपने इष्ट देव की आराधना के साथ प्रारम्भ करता है और उससे अधिकाधिक लाभ देने का आशीर्वाद चाहता है। इस प्रकार **धर्म ग्रामीणों के आर्थिक जीवन को प्रभावित करता है।**

(2) ग्रामों में धर्म **सामाजिक जीवन को भी आधार प्रदान करता है।** सामाजिक जीवन को पूर्ण बनाने के लिए अनेक संस्कारों का आयोजन किया जाता है। इन संस्कारों में हवन, यज्ञ, पूजा-पाठ, आदि धार्मिक कृत्यों का समावेश होता है जिनका सम्बन्ध धर्म से है। धार्मिक उत्सवों में अधिकांश लोग सम्मिलित होते हैं। एक धर्म के मानने वालों में परस्पर संगठन एवं एकता के भाव पाये जाते हैं।

(3) धर्म ग्रामीणों के **नैतिक जीवन का भी आधार है।** धर्म में मानव जीवन की नैतिकताओं का समावेश होता है। जीवों पर दया करना, सत्य बोलना, झूठ न बोलना, चोरी न करना, आदि नैतिक नियम धर्म के अंग हैं जिनके पालन की सभी लोगों से अपेक्षा की जाती है।

(4) धर्म **सामाजिक नियन्त्रण का एक सशक्त साधन है।** पाप-पुण्य, स्वर्ग-नर्क, पुनर्जन्म, कर्म के सिद्धान्त, आदि की धारणाएं ग्रामीणों को समाज के नियमों का पालन करने के लिए

1 A. R. Desai, *Ibid.*, p. 63.

प्रेरित करती हैं। धार्मिक नियम जो सामाजिक नियम भी हैं, का उल्लंघन करने पर सामाजिक निन्दा एवं बहिष्कार का तो भय रहता ही है, साथ ही इन्हें न मानने पर ईश्वर द्वारा दण्डित किये जाने का भी डर बना रहता है।

(5) धर्म ग्रामीणों के **जीवन में पवित्रता और आचरण में शुद्धता** लाने के लिए भी उत्तरदायी है। लोग धर्मच्युत होने के भय से अपवित्र आचरणों का त्याग कर शुद्ध एवं पवित्र आचरणों का पालन करते हैं और अपने से धर्म विरोधी कार्य, अपराध या पाप होने पर पुनः शुद्ध होने के लिए प्रायश्चित करते हैं अथवा विभिन्न प्रकार के संस्कार और कृत्यों का आयोजन करते हैं।

(6) **धर्म ग्रामीणों में सद्गुणों का विकास** करता है। धार्मिक आदर्श ग्रामीणों के जीवन का आदर्श होता है। धार्मिक नियम लोगों को दया, सहानुभूति, प्रेम, सहिष्णुता, अहिंसा और सहयोग, आदि सद्गुणों का पालन करने के लिए प्रेरित करते हैं।

(7) धर्म ग्रामीणों की **दैनिक एवं सामाजिक समस्याओं का समाधान** भी करता है। व्यक्ति जब चारों ओर से निराश हो जाता है तो वह ईश्वर की शरण में आता है। धार्मिक कथाओं में ईश्वर के दयालु स्वभाव एवं अपने भक्तों की सहायता आदि के वर्णन होते हैं। धर्म लोगों को मानसिक तनावों एवं संघर्षों से छुटकारा दिलाता है।

किन्तु कभी-कभी धर्म के नाम पर संघर्ष, तनाव दंगे और विवाद भी होते हैं। ऐसी स्थिति में धर्म समाज में विघटन एवं तोड़-फोड़ को जन्म देता है। वह सामाजिक समस्याओं को जन्म देता है। कभी-कभी धर्म वैज्ञानिकता तथा तर्क से भी मानव को दूर ले जाता है। वर्तमान में ग्रामीण धर्म में अनेक परिवर्तन आ रहे हैं। धार्मिक संकीर्णता समाप्त हो रही है और उनमें मानवतावाद प्रवेश कर रहा है। धर्म में अब लौकिक तत्वों का समावेश भी होने लगा है।

10. ग्रामीण शिक्षा
(RURAL EDUCATION)